

B.A V SEM

विषय - शिक्षा शास्त्र

प्रथम प्रश्न पत्र (EO10501T)

शैक्षिक आंकलनUnit I

आंकलन का अर्थ एवं परिभाषा बताइए !

Q.1

Ans.

आंकलन का शब्दिक अर्थ है - पूर्वानुमान द्वारा गणना करना, इकट्ठा करना या अनुमान लगाना। किसी के विषय में अनुमान लगाना या अनुमान के आधार पर निर्णय देने की प्रक्रिया को आंकलन कहते हैं। शैक्षिक आंकलन के सन्दर्भ में यह कहा जा सकता है कि आंकलन द्वारा यह ज्ञात किया जा सकता है कि छात्र ने किस स्तर तक सीखा है या किस स्तर तक अधिगम को ग्रहण करने में समर्थ रहा है।

क्रानवेक के अनुसार " आंकलन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा शिक्षक एवं छात्र यह निर्णय करते हैं कि शिक्षण लक्ष्यों को प्राप्त कर रहे या नहीं। "

ली के अनुसार " विद्यालय कक्षा और छात्र स्वयं के लिये निर्धारित किए गये शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति में छात्र की प्रगति की जाँच ही आंकलन है। "

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि आंकलन सतत चलने वाली प्रक्रिया है। इसके द्वारा छात्रों के अधिगम के स्तर को जाना जा सकता है और त्रुटि पोषण भी दिया जा सकता है।

Q. 2

Ans.

आंकलन के उद्देश्य बताइए !

आंकलन के निम्न लिखित उद्देश्य हैं -

1. अधिगम पर विश्वसनीय प्रतिपुष्टि प्रदान करना आंकलन का मुख्य उद्देश्य है।
2. छात्र के प्रगति के स्तर का पता लगाना !
3. छात्रों में अध्यापन के प्रति रुचि विकसित करना।
4. शिक्षकों की कुशलता एवं सफलता का पता लगाना।
5. पाठ रखने, समझने, लागू करने, विश्लेषण करने, मूल्यांकन करने एवं छात्रों की क्षमताओं का निर्माण करने का आंकलन करना।

Q. 3

Ans.

आंकलन का क्षेत्र स्पष्ट कीजिए।

आंकलन के प्रमुख क्षेत्र निम्न लिखित हैं -

1. शैक्षिक उपलब्धियों का पता लगाने में
छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों को ज्ञात करने के लिये आंकलन का प्रयोग किया जाता है।
2. वैयक्तिक विभिन्नता ज्ञात करने में
एक कक्षा में विभिन्न वैयक्तिक भिन्नता वाले छात्र उपस्थित होते हैं। अतः शिक्षक का कर्तव्य होता है कि प्रत्येक छात्र की व्यक्तिगत विभिन्नता को पहचान कर उसे उचित अधिगम प्रदान करें।
3. स्थान निर्धारित करने में
आंकलन का प्रयोग किसी संस्था में छात्र का स्थान निर्धारित करने के लिये किया जाता है।

पूर्वानुमान लगाने हेतु

4. पूर्वानुमान लगाने के लिये भी आंकलन का प्रयोग किया जाता है।

5. अनुसन्धान करने में

किसी भी वस्तु पर अनुसन्धान तभी प्रारम्भ किया जा सकता है जब उसके बारे में कुछ जानकारी उपलब्ध हो। उस वस्तु के बारे में आँकड़ें एकत्रित करने के लिये हम आंकलन का प्रयोग कर सकते हैं।

Q.4. शिक्षा के क्षेत्र में आंकलन का महत्व बताइए।

Ans.

शैक्षिक आंकलन ज्ञान, कौशल, मनोभाव एवं विश्वासों के सन्दर्भ में मापन की दस्तावेजीकरण प्रक्रिया है। शैक्षिक आंकलन के द्वारा किसी छात्र की शैक्षिक प्रगति का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है और उसके आधार पर उसे पृष्ठ पोषण प्रदान किया जा सकता है। तथा आंकलन के द्वारा शिक्षक अपनी शिक्षण विधि में सुधार ला सकता है। शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाने हेतु आंकलन महत्व पूर्ण है। अधिगम हेतु गुणवत्ता पूर्ण वातावरण प्रदान करने के लिये यह महत्व पूर्ण होता है। शिक्षक, शैक्षिक आंकलन का प्रयोग विभिन्न मानकों को स्थापित करने के लिये भी करते हैं।

आंकलन की आवश्यकता बताइए !

Q. 5

Ans.

आंकलन की आवश्यकता विद्यालय में अध्यापन के पश्चात छात्रों की अधिगम क्षमता, रुचि, व्यक्तित्व अभिव्यक्तता आदि के बारे में जानकारी करने तथा उनके अनुरूप पाठ्यक्रम निर्माण के लिये आंकलन की आवश्यकता पड़ती है। आंकलन की आवश्यकता निम्न बिन्दुओं को समझने के लिये पड़ती है—

1. छात्र क्या जानते हैं ?
2. छात्रों की विशिष्ट आवश्यकताएँ क्या हैं ?
3. छात्रों का रुझान में स्थान निर्धारित करने में।
4. माता-पिता को बच्चे की शैक्षिक प्रगति की जानकारी प्रदान करने के लिये।
5. छात्रों के कौशल, योग्यता एवं आवश्यकताओं की पहचान करने में।
6. अधिगम गतिविधियों को कैसे लागू किया जाए यह जानने हेतु।
7. छात्रों को विद्यालय से सम्बन्धित जानकारी प्रदान करने के लिये।
8. शिक्षण सामग्री के चयन के लिये।

मापन का अर्थ एवं परिभाषा बताइए ।

Q. 6

Ans.

आधुनिक समय में मनोविज्ञान को मानव-व्यवहार का विज्ञान कहते हैं और शिक्षा का उद्देश्य मानव व्यवहार में परिवर्तन करना है। यह जानने के लिये कि मानव व्यवहार में परिवर्तन किस रूप में किया जा रहा है और क्या परिवर्तन सही दिशा में हो रहा है, हम मानव व्यवहार का मापन करते हैं। शिक्षा और मनोविज्ञान के क्षेत्र में मापन का अभिप्राय है—मानव की दैहिक

और मानसिक विशेषताओं को नियमों के आधार पर प्रतीकों अंकों या संख्याओं के रूप में व्यक्त करना। मापन स्वयं ही रूप से परिणाम से सम्बंधित है। विभिन्न विद्वानों ने मापन को निम्न-2 प्रकार से परिभाषित किया है। यहाँ हम कुछ परिभाषाएँ प्रस्तुत कर रहे हैं—

हैल्मर्स टेडलर के अनुसार "मापन को एक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया जिसमें व्यक्ति अथवा वस्तु की विशेषताओं का सांख्यिक या आंशिक वर्णन होता है।"

स्टीवेन्स - "किसी निश्चित स्वीकृत नियमों के अनुसार पदार्थों को अंक या संख्या प्रदान करने की प्रक्रिया मापन है।"

कैम्पबेल - "नियमों के अनुसार वस्तुओं या घटनाओं को अंकों या संख्या प्रदान करने की प्रक्रिया मापन है।"

Q.7 मापन के प्रकार बताइए।

Ans. मापन दो प्रकार का होता है।

1. परिमाणात्मक मापन

2. गुणात्मक मापन

1. परिमाणात्मक मापन

परिमाणात्मक मापन का तात्पर्य है— कोई ऐसी वस्तु जिसकी भौतिक जगत में सत्ता हो, जिसमें आकार, विषय वस्तु, परिणाम आदि गुण हों, जिसे आँखों से देखा जा सके, जिसकी उपस्थिति का अनुभव किया जा सके। इन अर्थों में भौतिक मापन परिमाणात्मक होता है। जैसे— दूरी, लम्बाई, क्षेत्रफल, वजन आदि का मापन इन मापनों के लिये कुछ इकाइयों की आवश्यकता होती है जैसे— इंच, फुट, गज, किलो ग्राम, ग्राम आदि।

2. गुणात्मक मापन

इसका प्रयोग समाज विज्ञान के क्षेत्र

में होता है। शिक्षा और मनोविज्ञान के क्षेत्र में भी इसका प्रयोग होता है। इसका सम्बन्ध मानसिक मापन से होता है। यह आत्मनिष्ठ तथा अनिश्चित होता है। इस लिये यह जटिल होता है। इसका कोई पूर्ण / निरपेक्ष मानक या शून्य बिन्दु नहीं होता है। गुणात्मक या मानसिक मापन के अन्तर्गत मापी जाने वाली वस्तुओं की विशेषताओं की प्रकृति अस्थिर एवं अमौलिक रहती है।

Q. 8

मूल्यांकन का अर्थ एवं परिभाषा बताइए।

Ans.

मूल्यांकन दो शब्दों से मिलकर बना है - मूल्य तथा अंकन। अतः मूल्यांकन का शाब्दिक अर्थ है - किसी विषय, वस्तु, व्यक्ति या स्थिति के गुण-दोषों का विवेचन करके उसके सम्बन्ध में सही निर्णय करना या उसके वास्तविक मूल्य का निर्धारण करना।

मूल्यांकन एक उद्देश्य पूर्ण तथा निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। दूसरे शब्दों में मूल्यांकन द्वारा किसी मापित मूल्य का अवलोकन कर उसकी उपयुक्तता तथा मूल्य का निर्माण किया जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यांकन से अभिप्राय छात्रों की वैश्विक उपलब्धि से है।

टी. एल. टारगैसन के अनुसार "मूल्यांकन वह साधन है जिसके आधार पर छात्रों में निर्दिष्ट किसी योग्यता का मूल्य स्थापित किया जाता है।"

गंडेकर के अनुसार "मूल्यांकन हमें यह बताता है कि बालक ने किस सीमा तक किन उद्देश्यों को प्राप्त किया है।"

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मूल्यांकन एक अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है यह सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है यह शिक्षण लक्ष्यों से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है।

Q.9 मूल्यांकन की विशेषताएँ बताइए।

Ans

मूल्यांकन की निम्न लिखित विशेषताएँ हैं—

- (1) मूल्यांकन के द्वारा विभिन्न अवधारणों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- (2) यह पूर्णता उद्देश्य केंद्रित प्रक्रिया है।
- (3) यह एक सुव्यवस्थित प्रक्रिया है।
- (4) इस प्रक्रिया के आधार पर छात्रों में निहित योग्यताओं के संदर्भ में विश्वसनीय तथा वस्तुनिष्ठ जानकारी प्राप्त होती है।
- (5) मूल्यांकन प्रक्रिया का क्षेत्र अल्पन्त व्यापक है।

=

Q.10 मूल्यांकन के उद्देश्य बताइए।

Ans

मूल्यांकन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं—

- (1) इस प्रक्रिया के आधार पर विद्यार्थियों की मावी उपलब्धियों के सम्बन्ध में भविष्यवाणी की जा सकता है।
- (2) इस प्रक्रिया का उद्देश्य छात्रों को अधिगम की दिशा में प्रेरित करना।
- (3) मूल्यांकन का उद्देश्य छात्रों को शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन प्रदान करना है।
- (4) मूल्यांकन का उद्देश्य छात्रों के व्यवहार से सम्बंधित विभिन्न परिवर्तनों की जांच करना है।
- (5) मूल्यांकन का उद्देश्य शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में अपेक्षित सुधार करना।

=

मापन और मूल्यांकन में अंतर बताइए ।

Q. II

मापन	मूल्यांकन
(1) मापन में अंक प्रदान किये जाते हैं। कृषिओं को जाँच कर उनमें अंक प्रदान करना मापन कहलाता है।	अंक प्रदान करने के बाद जब हम अंकों का मूल्य निर्धारित करते हैं तो वह मूल्यांकन कहलाता है।
(2) मापन में समय, धन तथा श्रम की कम आवश्यकता होती है क्योंकि इसमें कम परीक्षाएँ होती हैं।	मूल्यांकन में श्रम, धन, समय की अधिक आवश्यकता होती है क्योंकि इसमें कई परीक्षाओं का निर्माण प्रशासन तथा विश्लेषण सम्मिलित रहता है।
(3) मापन के आधार पर मविष्य वाणी सार्थकता के साथ नहीं की जा सकती है।	मूल्यांकन के आधार पर मविष्य वाणी सार्थकता के साथ की जा सकती है।
(4) मापन के आधार पर निश्चित धारणा नहीं बनायी जा सकती है।	मूल्यांकन के आधार पर निश्चित धारणा बनाई जा सकती है।
(5) मापन का क्षेत्र सीमित होता है।	मूल्यांकन का क्षेत्र व्यापक होता है।

Q12 मापन और मूल्यांकन के क्षेत्र-कोन से उपकरण हैं ?

Ans.

मापन और मूल्यांकन के निम्न लिखित उपकरण हैं—

- (1) परीक्षण (2) प्रभावशी
- (3) साक्षात्कार (4) अवलोकन
- (5) समाजमिति (6) संचयी अभिलेख
- (7) निष्चयन मापनी (8) परीक्षण बैटरी
- (9) ऐनक जोटल अभिलेख (10) प्रक्षेपीय तकनीक
- (11) अनुसूची

==

Q13

मूल्यांकन का शिक्षा प्रक्रिया में क्या महत्व है ?

Ans.

मूल्यांकन एक उद्देश्य पूर्ण प्रक्रिया है। मूल्यांकन के द्वारा शिक्षण में सफलता की सम्भावना बढ़ जाती है। इसके आधार पर हम अपने द्वारा निर्धारित लक्ष्यों के अर्जन की मात्रा के विषय में जान सकते हैं जिससे हम अपना विधि-विधि की उपयोगिता के आधार पर उसका रुपान्तरण कर सकते हैं। इसके अन्तर्गत शिक्षण विधियों में परिवर्तन, सहायक सामग्री का उपयोग निर्धारित किया जाता है। मूल्यांकन छात्रों के वर्गीकरण तथा स्तरीकरण में सहायक होता है। मूल्यांकन के आधार पर व्यक्तिगत मन्त्रता को स्पष्ट करने में सहायता मिलती है। पाठ्यक्रम के परिवर्तन एवं परिमार्जन में मूल्यांकन उपयोगी है। मूल्यांकन ही एक मात्र साधन है जो निर्धारित करता है कि विद्यार्थी की जन्मजात एवं अर्जित योग्यताएं एवं क्षमताएं कितनी एवं क्या-क्या हैं जिसके आधार पर उसे भावी जीवन हेतु परामर्श दिया जाता है।

==

Q. 14 मूल्यांकन की सीमाएँ बताइए ।

Ans. मूल्यांकन की सीमाएँ निम्न लिखित हैं—

- (1) मूल्यांकन हेतु विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।
- (2) इसमें कई परीक्षाएँ सम्मिलित होती हैं जिसके कारण इसमें समय, धन तथा श्रम अधिक लगता है।
- (3) मूल्यांकन की प्रक्रिया अधिक व्यापक होती है, इस कारण इसमें शिक्षक सीच नहीं लेते हैं।
- (4) मूल्यांकन के लिये किसी भी तरह का प्रार्थक माप ढूँढ उपलब्ध नहीं है।

Q. 15 सतत मूल्यांकन का अर्थ बताइए ।

Ans. सतत मूल्यांकन एक ऐसी प्रक्रिया है जो शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया के साथ-साथ चलती रहती है। जिससे छात्रों के अनुभव एवं व्यवहारों में होने वाले परिवर्तन का मूल्यांकन लगातार होता रहता है। सतत मूल्यांकन लिखित, मौखिक तथा अन्य कई क्रियाकलापों के माध्यम से सम्पन्न किया जाता है। इससे शब्दों में हम कह सकते हैं कि सतत मूल्यांकन का आशय उस परीक्षण से है जिससे छात्र के अध्ययन एवं उपविधियों का प्रतिमाह लेखा-जोखा रखा जाता है तथा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को इकाइयों में विभक्त किया जाता है तथा प्रत्येक इकाई के शिक्षण के उपरान्त या शिक्षण के दौरान विभिन्न माध्यमों से छात्रों का मूल्यांकन किया जाता है। इस प्रकार सतत मूल्यांकन से तात्पर्य निरन्तर एवं निरन्तर होने वाले मूल्यांकन से है।

Q. 16 मानक का अर्थ एवं परिभाषा बताइए ।

Ans. एक मनो वैज्ञानिक और शैक्षिक परीक्षण पर किसी व्यक्ति को जो अंक प्राप्त होते हैं उन प्राप्तांकों को मूल प्राप्तांक कहते हैं। इन मूल प्राप्तांकों का न तो कोई अर्थ समझ में आता है और न ही इसकी व्याख्या की जा सकती है। इन मूल प्राप्तांकों को जब किसी मानक से सम्बंधित कर दिया जाता है तो यही मूल प्राप्तांक न केवल अर्थपूर्ण हो जाते हैं बल्कि इसकी व्याख्या भी सरल हो जाती है। इस प्रकार प्राप्तांकों को अर्थपूर्ण बनाने या उसकी व्याख्या करने की समस्या के समाधान के लिये ही परीक्षण निर्माता कुछ ऐसे सन्दर्भ बिन्दु निर्धारित करता है जिसके आधार पर जिन्हें तुलना करके परीक्षण पर प्राप्त प्राप्तांकों की व्याख्या की जा सके। इन्हीं सन्दर्भ बिन्दुओं को मानक कहते हैं। रैमर्स गेज तथा रूमेल के अनुसार "मानक दायों के किसी परिभाषित समूह के द्वारा परीक्षण पर प्राप्त निष्पादन स्तर हैं।"

Q. 17 ग्रेडिंग प्रणाली क्या है ?

Ans. अंकन प्रणाली की कमियों को दूर करने के लिये माध्यमिक शिक्षा आयोग तथा शिक्षा आयोग ने अंकों के स्थान पर ग्रेड प्रणाली का सुझाव दिया। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इस सन्दर्भ में कई कार्यशालाओं का आयोजन किया और इसके आधार पर 7 बिन्दु ग्रेड प्रणाली अपनाने का प्रावधान किया गया। ये सात बिन्दु ही ग्रेड कहे गये जो कि O, A, B, C, D, E और F हैं।
O का अर्थ है विशिष्ट, A का अर्थ है अति उत्तम, B का अर्थ है उत्तम, C का अर्थ है औसत, D का अर्थ है प्रामाण्य, E का अर्थ है निकृष्ट, F का अर्थ है अति निकृष्ट।

Q 18

ग्रेडिंग प्रणाली के गुण और दोष बताइए।

Ans. गुण

- (1) ग्रेडिंग छात्रों के अध्ययन एवं परीक्षा सम्बन्धी तनाव को कम करता है।
- (2) वे छात्र जो वर्ष भर मेहनत एवं लगन से पढ़ाई करते हैं परन्तु परीक्षा के दौरान अच्छा नहीं कर पाते हैं, उनके लिये यह प्रणाली सहायक है।
- (3) ग्रेडिंग अंकों के आधार पर छात्रों के मध्य वर्गीकरण को कम करता है।
- (4) यह अति योग्य छात्रों के मध्य प्रतिस्पर्धा को समाप्त करता है।
- (5) ग्रेडिंग प्रणाली सामाजिक दबाव को कम करती है।

दोष

- (1) यह परिश्रमी छात्रों को हतोत्साहित करता है।
- (2) ग्रेडिंग परिश्रम के द्वारा प्राप्त अच्छे अंकों की अवधारणा को समाप्त कर देता है।
- (3) ग्रेडिंग प्रणाली १० अंक प्राप्त करने वाले और ११ अंक प्राप्त करने वाले में कोई विभेद नहीं करता है।

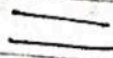
Q 19

शिक्षा में ग्रेडिंग प्रणाली का महत्व बताइए।

Ans.

छात्रों के किसी परीक्षा अथवा कोर्स में शैक्षणिक प्रदर्शन का मूल्यांकन एवं रैंकिंग करने की एक विधि-ग्रेडिंग सिस्टम है। यह छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि को मापने और विभिन्न क्षेत्रों में उसकी क्षमता का मूल्यांकन करने में सहायक होने के कारण शिक्षा में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करती है। यह विधि छात्रों में अधिक अंक

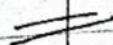
लाने के दबाव को कम करती है। ग्रेडिंग प्रणाली ने छात्रों के अध्यापन करना और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करना सरल बना दिया है। यह प्रणाली छात्रों का सतत मूल्यांकन करने में सहायक है। ग्रेडिंग प्रणाली अभिभावकों को उनके बच्चों की क्षमता और शैक्षणिक उपलब्धि की समझ प्रदान करने में सहायक है। ग्रेडिंग प्रणाली द्वारा छात्रों का सतत मूल्यांकन संभव है और यदि उनके अधिगम की गति कम है तो उन्हें उत्तम प्रदर्शन के लिये प्रेरित किया जा सकता है।



अंक और ग्रेड में अंतर स्पष्ट कीजिए।

Q.20

अंक	ग्रेड
1. यह मूल्यांकन की पारम्परिक प्रणाली है।	ग्रेडिंग प्रणाली एक नवीन प्रणाली है।
2. इसमें केवल शैक्षणिक पहलू को शामिल किया गया है।	इसमें शैक्षणिक तथा गैर शैक्षणिक दोनों पहलुओं को शामिल किया गया है।
3. इसमें उपलब्धि को अंकों में मापा जाता है।	इसमें उपलब्धि को कुल प्रदर्शन के आधार पर मापा जाता है।
4. इस प्रणाली में समय कम लगता है।	इस प्रणाली में समय अधिक लगता है।
5. इसमें समग्र विकास की कोई गुंजाइश नहीं है।	इसमें समग्र विकास की गुंजाइश है।
6. यह अंकन की व्यक्ति निष्ठ प्रणाली है।	यह वस्तु निष्ठ प्रणाली है।



Unit III

Q. 21

उत्तम परीक्षण से आप क्या समझते हैं?

Ans.

कोई भी मनोवैज्ञानिक परीक्षण जिसका कोई निश्चित उद्देश्य हो जिसका प्रशासन सरल हो तथा जो अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता हो, जो चयन, समय की दृष्टि से मितव्ययी हो तथा जिसे प्रमाणीकृत किया गया हो तथा जिसकी एक निश्चित विश्वसनीयता तथा वैधता हो और जिसके मानक निश्चित हो। उसमें विवेकीकरण की शक्ति भी होनी चाहिए।
मन के अनुसार "उत्तम परीक्षण एक ऐसी परीक्षा है जो बुद्धि, व्यक्तित्व, अभिवृत्ति या निष्पादन के संदर्भ में समूह में किसी व्यक्ति की सापेक्षिक स्थिति को स्पष्ट करती है।"

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि उत्तम परीक्षण उही परीक्षण को कह सकते हैं जिसमें उपरोक्त विशेषताएँ हो।

Q. 22

उत्तम परीक्षण की विशेषताएँ बताइए।

Ans.

उत्तम परीक्षण की निम्न लिखित विशेषताएँ हैं—

(1)

किसी भी परीक्षण की प्रमुख विशेषता उसका निश्चित उद्देश्य है। अतः उत्तम परीक्षण का निर्माण तभी सम्भव है जब हमारे पास कोई निश्चित उद्देश्य हो।

(2)

एक उत्तम परीक्षण की विशेषता उसकी व्यापकता है। परीक्षण में सभी पदों या प्रश्नों को स्पष्ट किया जाये। ताकि उस क्षेत्र के समस्त पदार्थों का मापन हो सके।

(3)

उत्तम परीक्षण की एक अन्य विशेषता उसका

मित व्यप्री होना है। परीक्षण के निर्माण में समय घट और कम कम लगना चाहिए।

4. एक उत्तम परीक्षण की विशेषता यह है कि परीक्षण वस्तु निष्ठ होना चाहिए। परीक्षण का फलान्कन करते समय अध्यापक की अभिमतगत रुचि का अभाव नहीं पड़ना चाहिए।

5. परीक्षण विश्वसनीय तथा वैध होना चाहिए।

6. उत्तम परीक्षण की एक अन्य विशेषता यह है कि उसे प्रश्नासत्र, फलान्कन एवं विवेचन के दृष्टिकोण से सर्वेव सुगम होना चाहिए।

7. उत्तम परीक्षण की एक विशेषता उसका मानकीकृत होना है। मानकीकरण का तात्पर्य परीक्षण के प्रश्नासत्र एवं फलान्कन की विधि में एक रूपता हो।

Q.23 वस्तुनिष्ठ परीक्षण का अर्थ एवं परिभाषा बताइए।

Ans. वस्तुनिष्ठ परीक्षण मूल्यांकन की एक पद्धति है जिसमें बूढ़े गए प्रश्नों का एक ही सही उत्तर होता है। वस्तुनिष्ठ प्रश्नों में आम तौर पर सही / गलत, बहुविकल्पीय और भेल खाने वाले प्रश्न शामिल होते हैं। वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन महत्व पूर्ण है क्योंकि यह मूल स्मरण से लेकर जटिल संश्लेषण तक, छात्र की क्षमता के प्रत्येक स्तर को प्रभावी ढंग से माप सकता है।

"गलस एवं डॉ लैण्ड के अनुसार" वस्तुनिष्ठ परीक्षण का अभिप्राय अंक एवं स्तर प्राप्त करना है जो सापेक्षिक रूप में आत्मनिष्ठ तत्वों से प्रभावित नहीं होते हैं।"

Q-24

वस्तु निष्ठ परीक्षण की विशेषताएँ बताइए !

Ans. 24

वस्तु निष्ठ परीक्षणों की विशेषताएँ निम्न लिखित हैं -

1. वस्तु निष्ठ परीक्षण में व्यक्तिनिष्ठता का अभाव होना

वस्तुनिष्ठ परीक्षणों में व्यक्तिनिष्ठता का अभाव पाया जाता है। परीक्षक की प्रेरणा, व्यक्तिगत निर्णय और भावा-शैली का प्रभाव इसके परिणामों पर नहीं पड़ता है।

2. वस्तु निष्ठ परीक्षण विश्वसनीय होते हैं

वस्तुनिष्ठ परीक्षण विश्वसनीय होते हैं। एक प्रश्न का एक ही उत्तर होता है। बार-बार जाँच किये जाने पर भी परिणाम हमेशा अपरिवर्तनीय ही रहता है।

3. वस्तु निष्ठ परीक्षण वैध होता है

वस्तुनिष्ठ परीक्षण में वैधता होती है। जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रश्नों का निर्माण किया जा रहा है, वह उसी उद्देश्य की पूर्ति करते हैं।

4. वस्तु निष्ठ परीक्षण के प्रशासन एवं अंकन में सरलता होती है

वस्तुनिष्ठ परीक्षण के प्रशासन एवं अंकन में सरलता होती है तथा इन परीक्षणों में अंकों की समानता पायी जाती है।

5. वस्तुनिष्ठ परीक्षण मितव्ययी होते हैं

वस्तुनिष्ठ परीक्षण मितव्ययी होते हैं। विद्यार्थियों को इनका उत्तर देने में समय कम लगता है तथा इन परीक्षणों का मूल्यांकन करने में भी समय की बचत होती है।

वस्तुनिष्ठ परीक्षण के गुण और दोष बताइए।

Q.25

वस्तु निष्ठ परीक्षण के निम्नलिखित गुण हैं-

Ans.

- (1) वस्तुनिष्ठ परीक्षण का अंकन सरलता से होजाता है।
- (2) इसमें त्रुटियों की सम्भावना कम होती है।
- (3) वस्तुनिष्ठ परीक्षण विश्वसनीय और वैध होते हैं।
- (4) वस्तुनिष्ठ परीक्षण सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- (5) वस्तुनिष्ठ परीक्षण पर आत्मनिष्ठता का प्रभाव नहीं पड़ता है।
- (6) वस्तुनिष्ठ परीक्षण उद्देश्य पूर्ति में सहायक होते हैं।

वस्तुनिष्ठ परीक्षण के निम्न लिखित दोष हैं-

- (1) वस्तुनिष्ठ परीक्षण के निर्माण में समय अधिक लगता है।
- (2) वस्तुनिष्ठ परीक्षण का निर्माण कुशल तथा अनुभवी अध्यापक ही कर सकते हैं।
- (3) इस परीक्षण के द्वारा छात्रों की भाषा शैली का अनुमान नहीं लगाया जा सकता है।
- (4) वस्तुनिष्ठ परीक्षणों में विद्यार्थी अनुमान के आधार पर उत्तर देते हैं।
- (5) इस प्रणाली में नकल की सम्भावना अधिक होती है।
- (6) वस्तुनिष्ठ परीक्षण द्वारा केवल तथ्यात्मक ज्ञान की जाँच होती है।

Q.26 वस्तुनिष्ठ परीक्षण के दोषों को दूर करने के उपाय बताइए।

Ans.

1. वस्तुनिष्ठ परीक्षणों के साध-साध लघु उत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्नों का प्रयोग भी सीमित रूप में किया जा सकता है।
2. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों में प्रश्न सरल एवं निर्देश स्पष्ट होने चाहिए।
3. प्रारम्भ में सरल प्रश्न, फिर सामान्य एवं अन्त में कठिन प्रश्न देने चाहिए।
4. प्रश्न प्रमात्मक नहीं होने चाहिए।
5. प्रश्नों के उत्तरों के अनुसार होना चाहिए।

Q.27 निबन्धात्मक परीक्षा से आप क्या समझते हैं?

Ans. वस्तुनिष्ठ परीक्षा की अपेक्षा निबन्धात्मक परीक्षा का प्रचलन काफी प्राचीन है। इस प्रकार परीक्षा की एक महत्व पूर्ण विशेषता यह होती है कि छात्र स्वतंत्र रूप से प्रश्नों के उत्तर दे सकता है। छात्र को आत्मनिर्भरता का अवसर प्राप्त होता है। निबन्धात्मक परीक्षा के आधार पर छात्रों की तर्क शक्ति, आलोचना, विश्लेषण, कल्पना, धूलपाकन आदि से सम्बन्धित मानसिक योग्यता की जांच की जा सकती है। विशेष कर उच्च कक्षाओं में इस प्रकार के प्रश्नों का समावेश नितान्त आवश्यक होता है।

Q.28 निबन्धात्मक परीक्षा के गुण और दोष बताइए।

- Ans. गुण—
1. निबन्धात्मक परीक्षाओं के निर्माण में सरलता होती है।
 2. निबन्धात्मक परीक्षा के अन्तर्गत विचारों को प्रकट करने की पूर्ण स्वतंत्रता होती है।
 3. निबन्धात्मक परीक्षाओं के द्वारा छात्रों की भाषा शैली का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।
 4. निबन्धात्मक परीक्षा में समय, धन और श्रम की बचत होती है।
 5. निबन्धात्मक परीक्षा का निर्माण कोई भी अध्यापक कर सकता है। इसमें विषय ~~विशेष~~ विशेषज्ञों की आवश्यकता नहीं होती है।

दोष

- (1) निबन्धात्मक परीक्षाओं में रटने पर अधिक बल दिया जाता है।
- (2) निबन्धात्मक परीक्षा में वस्तुनिष्ठता का अभाव पाया जाता है।
- (3) निबन्धात्मक परीक्षा में विश्वसनीयता और बेंचता का अभाव होता है।

- (4) ये परीक्षाएँ केवल इस बात पर बल देती हैं कि छात्रों ने पुस्तकीय ज्ञान किस सीमा तक ग्रहण किया है। पुस्तकीय ज्ञान पर अधिक बल दिया जाता है।
- (5) इन परीक्षाओं में छात्रों को स्थाई रूप से ज्ञान प्राप्त करने के लिये उद्दीपन नहीं मिल पाता है।

=

Q. 29 निबन्धात्मक परीक्षाओं के दोष दूर करने के उपाय बताइए।

- (1) मूल्यांकन का उद्देश्य, निर्धारित उद्देश्यों के सम्बन्ध में वस्तुनिष्ठ जानकारी प्रदान करना है। इस दृष्टि से मूल्यांकन और उद्देश्यों का घनिष्ठ सम्बन्ध है। अतः प्रयास किया जाना चाहिए कि निबन्धात्मक परीक्षाओं को अधिक से अधिक उद्देश्य केन्द्रित बनाया जाए।
- (2) प्रश्न-पत्रों के अन्तर्गत इस प्रकार के प्रश्नों का समावेश किया जाना चाहिए, जिनके आधार पर यह ज्ञात हो कि छात्रों में प्राप्त ज्ञान का प्रयोग करने की कितनी योग्यता है।
- (3) निबन्धात्मक परीक्षाओं के अन्तर्गत सम्मिलित किये जाने वाले प्रश्न सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होने चाहिए।
- (4) छात्रों के उत्तरों का मूल्यांकन करते समय, उनकी भाषा, लेख आदि को भी महत्व दिया जाना चाहिए।
- (5) निबन्धात्मक परीक्षा से सम्बन्धित प्रश्नपत्रों की रचना करते समय प्रश्नों के स्वरूप पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

=

Q. 30 आत्मनिष्ठ और वस्तुनिष्ठ परीक्षण में अन्तर स्पष्ट कीजिए

Ans. आत्मनिष्ठ और वस्तुनिष्ठ परीक्षण के बीच अन्तर को निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट कर सकते हैं —

	आत्म निष्ठ	वस्तुनिष्ठ
(1)	आत्म निष्ठ का अर्थ है कि किसी सत्पापन योग्य तथ्य के व्यक्तिगत राय के आधार पर चारणा बनाम व्याख्या करना।	वस्तुनिष्ठ का अर्थ है तथ्यों के आधार पर निष्पक्ष, संतुलित अवलोकन, जिसे सत्यापित किया जा सके।
(2)	आत्मनिष्ठ परीक्षण राय और व्याख्याओं पर आधारित होते हैं।	वस्तुनिष्ठ परीक्षण तथ्यों व आँकड़ों पर आधारित होते हैं।
(3)	आत्म निष्ठ परीक्षण अलग-2 ग्रेडिंग के आधार पर प्रभाव हो सकते हैं।	वस्तुनिष्ठ परीक्षण अधिक मानकीकृत और समान होते हैं।
(4)	आत्मनिष्ठ परीक्षणों को ग्रेड देने के लिये अधिक समय और प्रयास की आवश्यकता होती है।	वस्तुनिष्ठ परीक्षण में ग्रेड देने आसान होता है।
5	आवश्यक जानकारी की पुष्टि बिना व्यक्तिपरक मूल्यांकन किया जाता है।	आवश्यक जानकारी सत्यापित होने के बाद एक वस्तुनिष्ठ अवलोकन या मूल्यांकन किया जाता है।

उपलब्ध परीक्षण का अर्थ एवं परिभाषा बताइए।

Q.31

Ans.

मिन्न-मिन्न विद्यार्थी विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने आते हैं वे एक निश्चित अर्थ में विभिन्न विषयों और कौशलों में शिक्षण प्राप्त करते हैं। विद्यार्थी जो ज्ञान प्राप्त कर रहे, उसमें उनकी प्रगति कैसी है, यह जानने के लिये उनका जो मापन या मूल्यांकन किया जाता है उसे उपलब्ध परीक्षण कहते हैं।

गैरीसन तथा अन्य के अनुसार " उपलब्ध परीक्षा, बालक की वर्तमान योग्यता या किसी विशिष्ट विषय क्षेत्र के ज्ञान की सीमा का मापन करती है। "

इबेल के अनुसार " उपलब्ध परीक्षण वह है जो छात्र द्वारा ग्रहण किये ज्ञान का अथवा किसी कौशल में निपुणता का मापन करता है। "

इस प्रकार संक्षेप में हम कह सकते हैं कि उपलब्ध परीक्षण वे हैं जिनकी मदद से विद्यालय में पढ़ाए जाने वाले विषयों और सीखाने जाने वाले कौशलों में विद्यार्थियों की सफलता अथवा उपलब्धि का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

=

Q.32

उपलब्ध परीक्षण का महत्व बताइए।

उपलब्ध परीक्षण का निम्नलिखित महत्व है —

- (1) उपलब्ध परीक्षणों से बालकों को जो अंक प्राप्त होते हैं उससे उनके मानसिक और बौद्धिक स्तर का ज्ञान हो सकता है। इसके आधार पर कक्षा में छात्रों का वर्गीकरण किया जा सकता है।
- (2) इन परीक्षाओं के द्वारा छात्रों की कठिनाइयों का पता चलता है। कठिनाइयों को जानने के पश्चात् उनके समाधान का उपाय किया जा सकता है।
- (3) उपलब्ध परीक्षण के द्वारा हमें छात्रों की योग्यताओं और क्षमताओं का पता चलता है जिसके आधार पर उन्हें आगामी अध्यापन के लिये निर्देशन और प्रशिक्षण प्रदान किया जा सकता है।

- (4) उपलब्धि परीक्षण की मदद से प्रतिभावान छात्रों का पहले से पता चल जाता है और उन्हें समय से पूर्व ही अगली कक्षा में प्रोन्नति दी जा सकती है।
- (5) उपलब्धि परीक्षणों के द्वारा सरलता से कुशाग्र बुद्धि मन्द-बुद्धि तथा विशेष योग्यता वाले छात्रों का पता लगा कर व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार उनकी सहायता की जा सकती है।

Q. 33 उपलब्धि परीक्षणों के प्रकार बताइए।

Ans. उपलब्धि परीक्षण के निम्न विभिन्न प्रकार हैं—

- (1) प्रमापीकृत परीक्षण
- (2) आत्मनिष्ठ परीक्षण
- (3) मौखिक परीक्षण
- (4) अध्यापक निर्मित परीक्षण
- (5) वस्तुनिष्ठ परीक्षण
- (6) निबन्धात्मक परीक्षण

Q. 34 प्रमापीकृत (Standardized Tests) का अर्थ बताइए।

Ans. प्रमापीकृत शब्द का अर्थ है— किसी परिमाण तथा स्तर तक लागू हुआ। अतः प्रमापीकृत परीक्षण वह है जिसे किसी प्रमाण अथवा स्तर तक ला दिया गया है। इसका अभिप्राय है— तुलनात्मक मानक प्राप्त करने की प्रक्रिया। प्रमापीकरण में पाठ्यवस्तु का समालोचनात्मक विश्लेषण किया जाता है, पदों का चयन अत्यन्त सावधानी से किया जाता है, पदों में गुणों के अनुसार समानता रहती है एवं उपचारात्मक परीक्षण की अपेक्षा सार्वजनिक

विश्लेषण भी अधिक कड़ाई से किया जाता है।
गुड के अनुसार " एक प्रमापीकृत परीक्षण, वह परीक्षण है, जिसमें

विषय वस्तु अनुभव से चुनी या जाँची गयी हो, जिसमें मानक स्थापित किये गये हो, जिसमें प्रशासन एवं अंकन की एक समान शीतिमें का विकास किया गया हो और जिसका अंकन वस्तुनिष्ठ विधि से हो। "

=

Q.35 प्रमापीकृत परीक्षण की विशेषताएँ बताइए।

Ans.:

2.

इन परीक्षणों का निर्माण किसी विशेषज्ञ द्वारा किया जाता है।
इनका निर्माण परीक्षण निर्माण के सिद्धान्तों और निश्चित नियमों के आधार पर किया जाता है।

3.

इनका निर्माण विभिन्न कक्षाओं और विषयों के लिये किया जाता है। एक विषय और एक कक्षा के लिये कई प्रकार के परीक्षण होते हैं।

4.

इसमें दिये गये प्रश्नों का चयन निश्चित निर्देशों के अनुसार करना पड़ता है।

5.

प्रमापीकृत परीक्षणों का प्रकाशन किसी शिक्षण संस्थान या व्यापारिक संस्थान के द्वारा किया जाता है।

Q.36

प्रमापीकृत उपलब्धि परीक्षण और अध्यापक निर्मित परीक्षण में अन्तर बताइए।

Ans.

प्रमापीकृत परीक्षण

अध्यापक निर्मित परीक्षण

(1)

इनका निर्माण विषय विशेषज्ञों के द्वारा किया जाता है।

इनका निर्माण अध्यापकों के द्वारा किया जाता है।

(2)

इसमें विश्वसनीयता अधिक होती है।

इसमें विश्वसनीयता कम होती है।

(3)

यह परीक्षण वैध होते हैं।

इनमें वैधता का अभाव होता है।

(4)

इनमें विभिन्न समूहों या स्तरों के

इसमें किसी प्रकार के मानक की

मानक स्तर होते हैं।

आवश्यकता नहीं होती है।

(5)

इसे समस्त देश के किसी भी विद्यालय की किसी भी कक्षा में प्रयुक्त किया जा सकता है।

इसे केवल उसी विद्यालय की किसी कक्षा-विशेष के विशेष प्रयोग में लाया जाता है।

(6)

प्रत्येक प्रकार की शिक्षण विधियों के प्रभाव की तुलना करता है।

इसका प्रयोग विशिष्ट शिक्षण के उद्देश्यों के मापन के लिए किया जाता है।

Unit IV

Q.37

बुद्धि का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

Ans.

संसार के समस्त प्राणियों में मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ प्राणी के रूप में स्वीकार किया जाता है। इसका प्रमुख कारण मनुष्यों में निहित बौद्धिक योग्यताओं का होना है। बुद्धि अनेक योग्यताओं का पुंज है। स्मरण करने की योग्यता, तर्क, कल्पना, चिन्तन, निर्णय आदि योग्यताएँ। इन योग्यताओं का विकास करके ही व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। सामान्यतः बुद्धि अपनी निरूपति की समस्याओं को दूर करने की कुंजी है।

डियरबोर्न के अनुसार " बुद्धि अधिगम अथवा अनुभव का लाभ उठाने की योग्यता है। "

स्टर्न के अनुसार " बुद्धि जीवन के नयी समस्याओं के समाधान की सामान्य योग्यता है। "

बुडरो के अनुसार " बुद्धि बुद्धिमानता की क्षमता है। "

38

बुद्धि की विशेषताएँ बताइए ।

Ans.

बुद्धि की प्रमुख विशेषताएँ निम्न लिखित हैं -

- (1) बुद्धि से व्यक्ति को अपने विगत अनुभवों से लाभ उठाने की क्षमता प्राप्त होती है।
- (2) व्यक्ति बुद्धि के द्वारा ही सत्य-असत्य, उत्तम, अनुत्तम विचारों में अन्तर कर सकता है।
- (3) व्यक्ति की कठिन समस्याओं का समाधान बुद्धि से कर सकता है।
- (4) बुद्धि अपूर्त चिन्तन की योग्यता है।
- (5) बुद्धि जन्म जात योग्यता है।
- (6) बुद्धि वातावरण से अनुकूलन स्थापित करने की योग्यता है।

Q 39

सांवेगिक बुद्धि का अर्थ बताइए ।

Ans.

मानव में स्वयं के संवेगों को अनुभव करने नियंत्रित करने एवं मूल्यांकन करने तथा दूसरों के संवेगों को अनुभव करने, समझने तथा उसके प्रति प्रतिक्रिया करने की मानसिक योग्यता एवं क्षमता सांवेगिक बुद्धि कहलाती है। सांवेगिक बुद्धि का प्रतिपादन सैलोवी एवं मेयर ने किया है। हम लोगों ने इसे सामाजिक बुद्धि का एक प्रकार माना है। मारिसे सिलियास के अनुसार "संवेगात्मक बुद्धि योग्यताओं का एक ऐसा समूह है, जिसे हम अकादमिक कौशल के रिपोर्ट कार्ड के दूसरे पक्ष के रूप में समझते हैं।" गोलमैन के अनुसार "यह अपने एवं दूसरों के भावों को पहचानने की क्षमता तथा अपने आप को अभिप्रेरित करके एवं अपने संवेग को प्रबंधित करने की क्षमता है। इसके द्वारा उन क्षमताओं का वर्णन होता है जो शैक्षिक बुद्धि या बुद्धि लब्धि द्वारा मापे जाते हैं।"

Unit V

Q. 40 बुद्धि परीक्षण का अर्थ बताइए !

Ans.

बुद्धि परीक्षण किसी प्रकार का कार्य अथवा समस्या होती है जिसके द्वारा एक व्यक्ति के मानसिक विकास के स्तर का अनुमान लगाया जा सकता है। प्रत्येक बालक में कुछ जन्मजात योग्यताएँ होती हैं। सभी बालक एक समान नहीं होते हैं। अतः बालक की इस जन्मजात योग्यताओं का पता बुद्धि परीक्षणों के द्वारा लगाया जाता है। बुद्धि मापन से आशय - यह मालूम करना है कि बालक में कौन-कौन सी मानसिक योग्यताएँ कितनी हैं।

शिक्षालय में बुद्धि परीक्षणों का उपयोग व्यावहारिक कार्यों हेतु तथा सामान्यतः यह जानने के लिये किया जाता है कि बालक शिक्षालय के कार्य में कितनी सफलता अर्जित कर सकते हैं।

Q. 41 शिक्षा के क्षेत्र में बुद्धि परीक्षणों की उपयोगिता बताइए ।

Ans.

बुद्धि परीक्षणों का शिक्षा जगत में व्यापक उपयोग होता है। छात्र के विद्यालय में प्रवेश, उसका विषय निर्धारण करने, पाठ्यक्रमों एवं विषयों का चयन करने, प्रतिभाशाली एवं मन्द बुद्धि छात्रों का पता लगाने, अपराधी प्रवृत्ति वाले बालकों का पता लगाने आदि में बुद्धि परीक्षणों का उपयोग बहुत ही महत्व पूर्ण है। इसके अतिरिक्त छात्रों की बौद्धिक क्षमताओं का पता लगाने, छात्रों को व्यावसायिक एवं शैक्षिक निर्देशन प्रदान करने तथा उनके व्यक्तित्व को समझने में बुद्धि परीक्षणों का उपयोग अत्यन्त महत्व पूर्ण है। बुद्धि परीक्षणों के द्वारा छात्रों को तीव्र, सामान्य एवं मन्द

बुद्धि बालकों में विभाजित किया जा सकता है। बुद्धि परीक्षणों के द्वारा इस बात की भी जानकारी प्राप्त की जा सकती है कि शिक्षक छात्रों को सन्तोषजनक तरीके से पढ़ा रहा है या नहीं। बुद्धि परीक्षणों का सर्वाधिक उपयोग व्यावसायिक क्षेत्रों में होता है। इन परीक्षणों के द्वारा छात्र की व्यावसायिक योग्यता का अनुमान लगाया जा सकता है।

Q.42 बुद्धि लब्धि से आप क्या समझते हैं?

Ans.

बुद्धि लब्धि के विचार का सबसे पहला प्रयोग सन् 1916 में स्टेनफोर्ड बिने परीक्षण में किया गया। बुद्धि लब्धि मानसिक आयु तथा वास्तविक आयु के बीच का अनुपात है। बुद्धि लब्धि व्यक्ति की सामान्य योग्यता के विकास की गति का निर्धारण करती है। कोल स्क्व ब्रूस के अनुसार "बुद्धि लब्धि यह बताती है कि, मानसिक विकास की योग्यता में किस गति से विकास हो रहा है।"

बुद्धि लब्धि का सूत्र

$$IQ = \frac{MA}{CA} \times 100$$

IQ = बुद्धि लब्धि

MA = मानसिक आयु

CA = वास्तविक आयु

Q 43

व्यक्तिगत एवं सामूहिक बुद्धि परीक्षण से आप क्या समझते हैं?

Ans.

व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण

वैयक्तिक परीक्षण को एक समय में केवल एक ही व्यक्ति पर प्रशासित किया जाता है। व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण विश्वसनीय होते हैं, क्योंकि इसमें परीक्षक, प्रोजेक्ट के गुणों का अध्ययन अत्यन्त निकटता से करता है।

सामूहिक बुद्धि परीक्षण

यह परीक्षण जो एक समय में एक पूरे समूह पर प्रशासित किया जाता है, सामूहिक परीक्षण कहलाता है। इन परीक्षणों को केवल शिक्षित व्यक्तियों पर ही प्रशासित किया जा सकता है। ये शब्दिक होते हैं तथा सेवा अनुसन्धान उद्योग, इत्यादि में इसका उपयोग किया जाता है।

Q 44

व्यक्तिगत और सामूहिक बुद्धि परीक्षण के गुण और दोष बताइए।

Ans.

व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण के गुण

- (1) इस परीक्षण में परीक्षक एवं प्रोजेक्ट का प्रत्यक्ष सम्बन्ध होने के कारण, प्रोजेक्ट द्वारा चोखा देने की सम्भावना कम होती है।
- (2) इन परीक्षणों के द्वारा, परीक्षक को प्रोजेक्ट के व्यवहार का अध्ययन करने हेतु अवसर प्राप्त होता है।
- (3) इन परीक्षणों के आधार पर छात्रों को वैयक्तिक निर्देशन प्रदान किया जा सकता है।

दोष

- (1) इन परीक्षणों को प्रशासित करने के लिये विशेष

प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।

(2) इसके द्वारा व्यक्ति की विशिष्ट योग्यताओं का मापन सम्भव नहीं है।

(3) यह परीक्षण खर्चीला है।

(4) इसके प्रशासन में अधिक समय लगता है।

सामूहिक ब्रिद्ध परीक्षण के गुण एवं दोष

गुण

(1) सामूहिक ब्रिद्ध परीक्षण में समय और धन कम लगता है।

(2) इसमें किसी विशेष अशिक्षित व्यक्ति की आवश्यकता नहीं होती है।

(3) इसको प्रशासित करने हेतु किसी विशेष योग्यता का होना आवश्यक नहीं है।

दोष

(1) इसको किसी अशिक्षित व्यक्ति पर प्रशासित नहीं किया जा सकता है।

(2) इसमें चोरेखा देने की सम्भावना अधिक रहती है।

(3) सामूहिक परीक्षणों के द्वारा किसी व्यक्ति के व्यवहार के सम्बन्ध में जानकारी नहीं प्राप्त की जा सकती है।

Q.45 शक्ति एवं गति परीक्षण से आप क्या समझते हैं?

Ans.

शक्ति परीक्षण के द्वारा व्यक्ति की एक विशिष्ट क्षेत्र से सम्बद्ध शक्ति की परीक्षा ली जाती है। इस परीक्षण में प्रश्नों का स्वरूप सरल से कठिन हो जाता है, अर्थात् सबसे पहले व्यक्ति को सरल प्रश्न दिये जाते हैं उसके बाद प्रश्न कठिन होते जाते हैं। इस परीक्षण को प्रशासित करने में कितना समय लगेगा, यह निश्चित नहीं होता है।

शक्ति परीक्षण के गुण

- (1) ये परीक्षण छोटे बालकों के लिये उपयोगी होते हैं।
- (2) इन परीक्षणों द्वारा किमा गया मूल्यमंकन विश्वसनीय तथा वैध होता है।
- (3) इन परीक्षणों में श्रम कम होता है।

गति परीक्षण

गति परीक्षण में प्रश्न जीवित होते हैं। इन प्रश्नों को एक निश्चित समय में पूरा करना होता है। निर्धारित समय में जो व्यक्ति जितने अधिक प्रश्न हल कर लेता है वह उतना अधिक अंक प्राप्त करता है। गति परीक्षण के द्वारा व्यक्ति की मानसिक गति का मापन किया जाता है।

Q. 46

शाब्दिक परीक्षण एवं क्रियात्मक परीक्षण का अर्थ बताइए।

Ans.

शाब्दिक परीक्षण

जिन परीक्षणों को हल करने हेतु शब्दों का प्रयोग करना होता है, वे शाब्दिक परीक्षण कहलाते हैं। इस परीक्षण में शब्दों के साथ-साथ संख्याओं का भी प्रयोग करना पड़ता है। इस प्रकार शाब्दिक परीक्षण के द्वारा व्यक्ति की शाब्दिक योग्यता के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

क्रियात्मक परीक्षण

क्रियात्मक परीक्षण को निष्पादन परीक्षण भी कहा जाता है। इस परीक्षण का निर्माण टिली ने किया था। इस परीक्षण में किसी ठोस वस्तु के द्वारा व्यक्ति कापि करता है।

विश्लेषण के द्वारा व्यक्ति की बुद्धि एवं योग्यता के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की जाती है।

फ्रीमैन के अनुसार "क्रियात्मक परीक्षण", वह परीक्षण है जिसमें मापों को मात्र सूचना हेतु प्रयुक्त किया जाता है। समस्त सूचनायें संकेत के माध्यम से दी जाती हैं। इसमें भाषा का प्रयोग नहीं किया जाता है। यह परीक्षण बूढ़े, बड़े बालकों के लिये बहुत उपयोगी होता है।

Unit VI

Q47 व्यक्तित्व का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

Ans. व्यक्तित्व शब्द अंग्रेजी के Personality शब्द का पर्याय है। Personality शब्द लैटिन शब्द परसोना से बना है, जिसका अर्थ 'नकाब' होता है। इसे ग्रीक नायक नाटक करते समय पहनते थे। प्रारम्भ में व्यक्तित्व का अर्थ व्यक्ति के बाह्य रूप रंग से ही लगाया जाता था। लेकिन इस व्याख्या को पूर्णतः अवैज्ञानिक घोषित कर दिया गया क्योंकि कई ऐसे व्यक्तियों के उदाहरण मिलते हैं जिनका बाह्य रूप रंग इतना आकर्षक नहीं होता है लेकिन उनका व्यक्तित्व आकर्षक माना जाता है। मनोविज्ञान में व्यक्तित्व का अर्थ व्यक्ति के रूप एवं गुणों की समीक्षा से है। इस प्रकार व्यक्तित्व, बाह्य आवरण और आन्तरिक गुणों दोनों का गतिशील सम्मिश्रण है जो कि परिवर्तन के प्रभाव से बराबर बदलता रहता है। व्यक्तित्व की कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएँ निम्न लिखित हैं—

वैलेंटाइन के अनुसार "व्यक्तित्व जन्मजात और अर्जित प्रवृत्तियों का योग है।"

गिलफोर्ड के अनुसार "व्यक्तित्व, गुणों का समन्वित रूप है।"

ऑलपोर्ट के अनुसार "व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनो-शारीरिक गुणों का गतिशील संगठन है जो वातावरण के साथ अक्रियतापूर्ण समाप्रतिक्रिया को निर्धारित करते हैं।"

Q 48

व्यक्तित्व के प्रकार बताइए।

Ans.

युंग ने सभी व्यक्तियों को उनके सामाजिक कार्यों में भाग लेने अथवा रुचि प्रदर्शित करने के दृष्टिकोण से बहिर्मुखी, अन्तर्मुखी तथा उभयमुखी वर्गों में वर्गीकृत किया है -

बहिर्मुखी

ऐसी व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों की रुचि बाह्य जगत में होती है। वे अपने विचारों एवं भावनाओं को स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हैं। वे संसार के भौतिक और सामाजिक लक्ष्यों में विशेष रुचि रखते हैं। वे उत्साहवादी एवं आशावादी होते हैं। वे धर्मांध से सम्बन्ध रखते हैं तथा आदर्शवाद से दूर रहते हैं। ये व्यवहार कुशल होते हैं। वातावरण के साथ आसानी से अनुकूलन स्थापित कर लेते हैं।

अन्तर्मुखी

ये व्यक्ति बहिर्मुखी से विपरीत होते हैं। ये चिन्तनशील होते हैं और अपने आप में ही केन्द्रित रहते हैं। इस प्रकार के व्यक्तियों के व्यक्तित्व के लक्षण, स्वभाव आदते, अभिव्यक्तियाँ आदि बाह्य रूप में प्रकट नहीं होते हैं। इसी लिये इनको अन्तर्मुखी कहा जाता है। ये लोगों से मिलना जलवा पसन्द नहीं करते हैं। ये एकाकी होते हैं। ये भाव प्रधान होते हैं। ऐसे व्यक्ति अच्छे लेखक, विचारक होते हैं।

उभयमुखी

कुछ व्यक्तियों में बहिर्मुखी तथा अन्तर्मुखी दोनों प्रकार के गुण पाये जाते हैं। ऐसे व्यक्तियों को उभयमुखी कहा जाता है।

Unit VII

व्यक्तित्व मापन का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

Q. 49

Ans.

व्यक्तित्व को अनेक शील गुणों का संगठन माना जाता है। व्यक्तित्व की माप के द्वारा व्यक्ति के शील गुणों के बारे में पता लगाया जाता है कि वह संगठित है अथवा असंगठित। क्योंकि यदि वे संगठित रूप में होंगे तो व्यक्ति समान होगा और यदि शील गुण असंगठित होंगे तो व्यक्ति असामान्य होगा।

सर्वप्रथम सन् 1880 में फ्रांसिस गाल्टन ने व्यक्तित्व मापन के लिये प्रश्नावली विधि का प्रयोग किया था। इसके बाद पहली प्रश्नावली पुडवर्क ने 1918 में बनाई, जिसका उद्देश्य सैनिकों की संवेगात्मक अस्थिरता का पता लगाना था। तबसे लेकर आज तक इस दिशा में कार्य जारी है। वेले तो जीवन के प्रत्येक कार्य क्षेत्र में व्यक्तित्व मापन की आवश्यकता होती है। वैयक्तिक समस्याओं के समाधान में व्यक्तित्व परीक्षणों का उपयोग किया जाता है। व्यक्तित्व मापन से तात्पर्य एक ऐसे परीक्षण, पत्र या विधियों से है जिनके द्वारा व्यक्तित्व के शील गुणों का मूल्यांकन किया जाता है।

Q. 50

प्रक्षेपण का अर्थ एवं परिमाण बताइए।

Ans.

प्रक्षेपण का शाब्दिक अर्थ यह है कि व्यक्ति अपने को उभार कर अपने सामने लाए। प्रक्षेपण शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग मनो वैज्ञानिक सिगमण्ड फ्रायड ने किया था। प्रक्षेपण एक रक्षा प्रणाली या प्रक्रिया है जिसमें आवेगों, इच्छाओं और विचारों को बाह्य रूप दिया जाता है क्योंकि उनकी सचेत मान्यता अहंकार के लिये बहुत दर्दनाक होती है।

फ्रॉयड के अनुसार " प्रक्षेपण प्रक्रिया के द्वारा व्यक्ति अपनी सभी वांछित या अवांछित इच्छाओं तथा प्रेरणाओं को दूसरों पर आरोपित करता है। "

प्रक्षेपण विधि एक ऐसी उद्देजित करने वाली स्थिति प्रस्तुत करती है जिससे उत्तरदाता स्वतंत्र रूप से स्वयं की जानकारी दे सके और

उसे यह महसूस नहीं हो कि प्रयोग कर्ता यह सब कुछ किसी विशेष उद्देश्य के लिये कर रहा है।

Unit VIII

Q. 51. अभिक्षमता का अर्थ एवं परिमाण बताइए।

Ans.

अभिक्षमता का आशय प्राणी के चेतन की उस योग्यता या सामर्थ्य से है जिससे वह कुछ कर पाने में सक्षम होता है। क्षमता शब्द में 'अभ' उपसर्ग जोड़ देने से अभिक्षमता शब्द बना है जिसका अर्थ सामर्थ्य शक्ति से है। यह ऐसी विशिष्ट योग्यता है जो व्यक्ति को विशिष्ट क्षेत्र में वांछित स्तर की निपुणता प्राप्त करने में सक्षमता प्रदान करती है।

प्रीमैन के अनुसार " अभिक्षमता कुछ विशेषताओं का मिश्रण है जो प्रशिक्षण द्वारा कुछ विशिष्ट ज्ञान, कौशल या संगीत अनुक्रियाओं के समूह को प्राप्त करने की ओर संकेत करता है जैसे - भाषा को बोलने की योग्यता, संगीतकार बनने की योग्यता, मशीनी कार्य करने की योग्यता आदि।" इंग्लिश एवं इंग्लिश के अनुसार " प्रशिक्षण की दी गई मात्रा के साथ दक्षता दायित्व करने की क्षमता।"

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अभिक्षमता एक निश्चित प्रकार के कार्य करने की जन्मजात क्षमता है।

Q. 52. अभिक्षमता की विशेषताएँ बताइए।

Ans.

(1)

अभिक्षमता की निम्न विसिष्ट विशेषताएँ हैं—
अभिक्षमता किसी व्यक्ति की अभियोग्यता या गुणों का मिश्रण है।

- (2) अभिक्षमता व्यक्तित्व का अंग है।
 (3) अभिक्षमता वर्तमान वस्तुस्थिति क्षेत्रों पर भी गतिविधि की ओर निर्देशन करती है।
 (4) यह गुणों का एकीकरण है जो क्षमताओं की ओर संकेत करता है।
 (5) अभिक्षमता किसी कार्य में सम्भाव्य योग्यता से भी अधिक है इसमें किसी क्रिया को पूर्ण करने में उपपुस्तता का भाव भी निहित है।
 (6) किसी भी व्यवसाय में अभिक्षमता प्राप्त करने की तत्परता के साथ उस क्षेत्र में उस व्यक्ति की रुचि भी होनी चाहिए।

Q. 53 अभिक्षमता मापन क्या है? अभिक्षमता मापन का वर्गीकरण कीजिए!

Ans. मनो वैज्ञानिकों के द्वारा अभिक्षमता के मापन के लिये निर्मित परीक्षणों को अभिक्षमता परीक्षण कहते हैं। इसे किसी विशिष्ट क्षेत्र में व्यक्ति की अन्तःनिहित क्षमता को मापने के लिये बनाया जाता है। अभिक्षमता परीक्षण का प्रयोग अधिकतर विभिन्न व्यवसायों के सम्बन्ध में किया जाता है। अभिक्षमता परीक्षण उपलब्धि परीक्षण से अलग होता है क्योंकि उपलब्धि परीक्षण में व्यक्ति की विशिष्टता एवं निपुणता के क्षेत्र का पता प्रशिक्षण देने के बाद लगाया जाता है, जबकि अभिक्षमता परीक्षण प्रशिक्षण के पहले की स्थिति पर प्रकाश डालता है। अतः किसी विशेष क्षेत्र में व्यक्ति के निष्पादन के बारे में पूर्व कथन करने वाले संज्ञानात्मक परीक्षण को ही अभिक्षमता परीक्षण कहा जाता है।

जीमैन के अनुसार "अभिक्षमता परीक्षण वह है जिसकी रचना व्यक्ति की किसी विशेष प्रकार की योग्यता तथा किसी किसी सीमित क्षेत्र की क्रिया करने की मूलभूत योग्यताओं को मापने के लिये की जाती है।"

अभिक्षमता का मापन

अभिक्षमता का मापन अभिक्षमता परीक्षणों द्वारा किया जाता है। अभिक्षमता परीक्षणों को मुख्य रूप से दो वर्गों में वर्गीकृत किया

जा सकता है।

- (i) सामान्य अभिक्षमता परीक्षण
(ii) विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण

सामान्य अभिक्षमता परीक्षण - इस प्रकार के परीक्षणों के अन्तर्गत एक परीक्षण के अधिक उपपरीक्षण होते हैं तथा प्रत्येक उपपरीक्षण किसी न किसी मात्रा में व्यक्ति की किसी विशिष्ट अभियोग्यता का मापन करता है।

विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण - इस प्रकार के परीक्षणों के अन्तर्गत यांत्रिक अभियोग्यता परीक्षण तथा लिपिक अभिक्षमता परीक्षण आदि आते हैं।

Q. 54 अभिक्षमता परीक्षणों के लाभों का उल्लेख कीजिए।

- Ans. अभिक्षमता परीक्षण मानकीकृत एवं वस्तुनिष्ठ परीक्षण हैं। इनके द्वारा वस्तुनिष्ठ तुलना की जा सकती है।
- ये परीक्षण विरवैसनीय तथा वैध होते हैं, इनके द्वारा किसी व्यक्ति की शक्तियों और कमजोरियों का सही-सही आंकलन किया जा सकता है।
 - अभिक्षमता परीक्षण सामूहिक परीक्षण होते हैं, इसलिए एक साथ बड़ी संख्या में उम्मीदवार परीक्षा दे सकते हैं। इसके निर्माण में समय और लागत कम लगती है।
 - अभिक्षमता परीक्षण संगठन की प्रशिक्षण आवश्यकताओं का आंकलन करने में मदद करते हैं।
 - कुछ लोग आगे-सामने के साक्षात्कार की स्थिति में चिन्ता/धबराहट के कारण अपनी असली क्षमता नहीं प्रदर्शित कर पाते हैं। अभिक्षमता परीक्षण उन्हें ये अवसर प्रदान करता है कि वे बिना धबराहट हुए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन दे सकें।